अध्याय 17

वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति

आदि काल से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है। शान्ति एवं सहिष्णुता सनातन संस्कृति के प्रमुख आदर्श रहे हैं। इन्हीं आदर्श परम्पराओं की झलक हमें वैदिक सभ्यता में देखने को मिलती है, जिसके बारे में हम इस अध्याय में जानेंगे।

वैदिक संस्कृति भारत की सनातन संस्कृति है। वैदिक संस्कृति का ज्ञान हमें वेदों तथा वैदिक साहित्य से प्राप्त होता है। वेद हमारी संस्कृति की धरोहर है। वेदों में उस समय के लोगों के रहन–सहन, जीवन,समाज व्यवस्था, परिवार व्यवस्था, व्यवसाय आदि का उल्लेख मिलता है। सबसे पहले ऋग्वेद लिखा गया। शेष तीन वेद तथा वैदिक साहित्य बाद में लिखे गए थे। वेदों को लिखे जाने के आधार पर वैदिक काल को दो भागों में बाँटा गया है–

1. पूर्व वैदिक काल 2. उत्तर वैदिक काल

गतिविधि : पढ़ें व बताएँ–

1. वैदिक संस्कृति का ज्ञान हमें कहाँ से प्राप्त होता है ?
2. वैदिक काल को कितने भागों में बाँटा जा सकता है ?
3. वसुधैव कुटुम्बकम् का क्या अर्थ है ?

ऋग्वेद के समय की सभ्यता को ऋग्वैदिक सभ्यता एवं उसके बाद वैदिक काल की सभ्यता को उत्तर वैदिक काल की सभ्यता कहते हैं।

वैदिक साहित्य–

वेद भारतीय संस्कृति के महत्त्वपूर्ण आधार है। सत्य एवं ज्ञान के बीज हमें वेदों से प्राप्त होते हैं क्योंकि समस्त ज्ञान वेदों में निहित है। वेद भारत का आदि ग्रन्थ है एवं आर्यावृत्त की प्राचीन रचनाएँ हैं। इनकी संख्या चार हैं–

1. ऋग्वेद	2. यजुर्वेद	3. सामवेद	4. अथर्ववेद

(1) ऋग्वेद– यह सबसे प्राचीन वेद है। वर्तमान में प्रचलित गायत्री मंत्र ऋग्वेद का ही एक मंत्र है।

(2) यजुर्वेद– यह ऋग्वेद से बहुत बाद में लिखा गया वेद है। इसमें यज्ञों में प्रयुक्त होने वाले श्लोक एवं मंत्र है। यह गद्य–पद्य दोनों में लिखा गया है।

(3) सामवेद– सामवेद में देवताओं की पूजा करने के सभी मंत्र शामिल है। यज्ञ के समय देवताओं की स्तुति करने के लिए जो गीत गाए जाते हैं, सामवेद में उसका संग्रह है। भारतीय संगीत में स्वर का उद्‌भव सामवेद से हुआ है। इसका कुछ भाग ऋग्वेद से लिया गया है।

(4) अथर्ववेद– इस वेद का नाम अथर्व ऋषि के नाम पर पड़ा है। इसमें चिकित्सा–विधि एवं रोगों से सम्बन्धित ज्ञान आदि संकलित है।

क्या आप जानते हैं कि वेद के चार भाग हैं–

1. संहिता 2. ब्राह्मण 3. अरण्यक 4. उपनिषद्

वैदिककालीन धर्म एवं दर्शन–

सम्पूर्ण भारतीय जीवन, दर्शन और साहित्य का आधार धर्म ही रहा है। भारतीय संस्कृति के परम् प्राण धर्म में ही विद्यमान है। धर्म के अन्तर्गत सत्य बोलना, चोरी न करना, कर्म व वचन से पवित्रता का पालन करना तथा काम–क्रोध पर नियन्त्रण, इंद्रियों पर नियत्रंण, दान–धर्म करना आदि बातें षामिल हैं। वैदिक धर्म व दर्शन केवल भारतीयों को दृष्टि में रखकर ही अपना स्वरूप प्रकट नहीं करता है बल्कि यह मानव को विश्व–मानव बनाने की योग्यता रखता है। यह दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी है।

गतिविधि

अपने गुरुजी को पूछ कर बतायें निम्न प्राचीन स्थानों के वर्तमान नाम क्या है ?

1. इन्द्रप्रस्थ 2. पाटलीपुत्र 3. मिथिला 4. कौशल

अब हम वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा करेंगे।

वैदिक कालीन सामाजिक जीवन

वैदिक सामाजिक जीवन की प्रमुख विशेषताएँ:–

1. संयुक्त परिवार प्रथा
2. नैतिक व आध्यत्मिक शिक्षा
3. नारी का समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान
4. जीवन में सोलह संस्कारों का महत्त्व
5. वासुधैव कुटुम्बकम् की भावना
6. आश्रम व्यवस्था

1. संयुक्त परिवार प्रथा– वैदिक काल में आर्यों का जीवन काफी सुव्यवस्थित था। समाज की मूल इकाई परिवार थी। पिता परिवार का मुखिया होता था। वैदिक काल में संयुक्त परिवारों की प्रधानता थी। माता–पिता, भाई–बहिन, चाचा–भतीजा, पुत्र–पौत्र आदि चार–पाँच पीढ़ियाँ एक ही परिवार में साथ–साथ रहती थी। संयुक्त परिवार प्रणाली के मूल में दो बातें प्रमुख थी, एक–परिवार की सम्पत्ति तथा सदस्यों की सुरक्षा, दूसरा–आजीविका। आजीविका के मुख्य साधनों यथा कृषि, पशुपालन तथा कुटीर उद्योग धन्धों में सभी का सम्मिलित योगदान होता था। इस प्रकार उनका पारिवारिक जीवन सुखी एवं शान्तिमय था। यद्यपि पुरुष परिवार का मुखिया होता था किन्तु परिवार के कार्यों में महिलाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान था।

2. शिक्षा– वैदिक काल में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण स्थान था। शिक्षा का आधार सादा–जीवन उच्च विचार था। गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। लड़के –लड़कियों को समान रूप से शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा का माध्यम संस्कृत था। उस समय संस्कृत भाषा काफी उन्नत अवस्था में थी। शिक्षा का प्रधान लक्ष्य बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास तथा आचरण की पवित्रता को विकसित करना था।

3. नारी का स्थान– वैदिक काल में समाज में स्त्रियों को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। परिवार में स्त्री को पुरुषों की तरह सभी अधिकार प्राप्त थे। सामाजिक व धार्मिक समारोहों पर वह पुरुषों के साथ भाग लेती थी।

इस काल में पर्दा प्रथा नहीं थी। लड़कियों को पढ़ाने का प्रचलन था, जिसके परिणामस्वरूप घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, श्रद्धा आदि परम विदुषी स्त्रियाँ इस काल में हुई थी, जिन्होंने वैदिक ऋचाओं की रचना की थी। 'यत्र नार्यऽस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'–अर्थात् जहाँ स्त्रियों का सम्मान होता है वहाँ देवताओं का निवास होता है" आदि के प्रमाण हमें वेदों के अनेक मंत्रो से प्राप्त होते हैं।

4.संस्कार– वैदिक संस्कृति में संस्कारों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। बच्चे के जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह, मृत्यु आदि के अवसर पर विधि–विधान से अनुष्ठान एवं संस्कारों की प्रथा प्रचलित थी। इस तरह एक व्यक्ति के जीवन में जन्म से मृत्युपर्यन्त कुल 16 संस्कारों का प्रचलन था। यज्ञ जीवन का आवश्यक अंग था। इसे स्त्री–पुरुष दोनों करते थे। अधिकांश संस्कार मंत्रोच्चार एवं यज्ञ के साथ संपन्न होते थे। बाल–विवाह उस काल में नहीं होते थे। एक पत्नी प्रथा उस समय प्रचलन में थी। आज भी हिन्दू परिवारों में इन संस्कारों को अपनाया जा रहा है।

5. वसुधैव कुटुम्बकम्– वसुधैव कुटुम्बकम् का अर्थ है– सम्पूर्ण पृथ्वी के प्राणीमात्र के एक ही परिवार का हिस्सा होने की उदात्त भावना। वैदिक काल में प्रत्येक व्यक्ति इस भावना से व्यवहार करता था– 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे अनेक मंत्र वैदिक साहित्य में पढ़ने को मिलते हैं। उस समय लोग इसके अनुरूप व्यवहार भी करते थे। मानव ही नहीं बल्कि इस धरती के प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखना यहाँ के सामान्य जन की विशेषता रही है।

6. आश्रम व्यवस्था– हमारा सम्पूर्ण जीवन व्यक्तिभाव से ऊपर उठकर समाज के भाव को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहा हैं। व्यक्ति से समाज तक की यात्रा के पड़ाव के रूप में इन आश्रमों का निरूपण किया गया था। मनुष्य जीवन की आयु को 100 वर्ष मानकर आश्रम जीवन को चार भागों में बाँटा गया है–

1. ब्रह्मचर्य आश्रम 2. गृहस्थ आश्रम 3. वानप्रस्थ आश्रम 4. संन्यास आश्रम

(अ) ब्रह्मचर्य आश्रम– ब्रह्मचर्य आश्रम मनुष्य के जीवन का पहला भाग माना गया है। इसमें यज्ञोपवीत संस्कार से 25 वर्ष की आयु तक व्यक्ति अविवाहित रहते हुए गुरुकुल में रह कर विद्या अध्ययन करता था। ब्रह्मचर्य आश्रम में जो कुछ सीखता था, उसको वह अपने व्यवहार में उतारने का कार्य गृहस्थाश्रम में करता था।

(ब) गृहस्थ आश्रम– गृहस्थाश्रम की आयु 25–50 वर्ष तक मानी गई थी। गृहस्थ पर सम्पूर्ण समाज का दायित्व होता है। विवाह इस आश्रम का मुख्य संस्कार है। यह आश्रम अन्य सभी आश्रमों का पोषक है। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, एवं संन्यासियों का पोषण तो गृहस्थ ही करते थे।

(स) वानप्रस्थ आश्रम– वानप्रस्थाश्रम की आयु 50–75 वर्ष तक के बीच मानी गई है। जैसा कि शब्द से प्रतीत होता है, वानप्रस्थ आश्रम में व्यक्ति परिवार के दायित्व से मुक्त होकर अपना जीवन गाँव के निकट जंगल में बिताता था। गृहस्थ आश्रम में रहकर जो अनुभव प्राप्त किया था, उसको समाज में बाँटता था। गृहस्थ आश्रम में वह अपने परिवार के कल्याण के लिए सोचता था किन्तु यहाँ पर वह सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए सोचता है। गृहस्थों को सलाह देना इस आश्रम की मुख्य विशेषता थी।

(द) संन्यास आश्रम– संन्यास आश्रम मनुष्य की आयु का 75–100 वर्ष माना गया है। वानप्रस्थ आश्रम तक की यात्रा में जब मनुष्य ज्ञान व कर्म की शिक्षा को पूर्णरूपेण प्राप्त कर लेता है तब वह उपदेश देने के योग्य हो जाता है। उपदेशक निःस्वार्थी होता है। इस काल में व्यक्ति अपना सम्पूर्ण भाग उस परम् पिता परमात्मा को सौंप कर समाज को ही अपना आराध्य मानकर जीवन के शेष 25 वर्ष समाज की सेवा के लिए समर्पित करता है। इस आश्रम में व्यक्ति एक जगह नहीं रहता बल्कि अलग–अलग स्थानों पर विचरण करता हुआ लोगों को सदाचार की शिक्षा देता था।

7. वर्ण व्यवस्था– वर्ण व्यवस्था का प्रारम्भिक स्वरूप बहुत अच्छा था। वह कर्म और श्रम के सिद्धान्त पर आधारित थी। जन्म से इसका कोई संबंध नहीं था। कर्म से कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अथवा शूद्र हो सकता था। वर्ण व्यवस्था व्यवसाय से जुड़ी हुई थी और वर्ण विभाजन जन्मजात नहीं था। आवश्यकतानुसार कोई भी व्यक्ति अपना व्यवसाय बदल सकता था, और इसके साथ ही उसका वर्ण भी बदल जाता था। इन वर्णों में अपने खान–पान तथा वैवाहिक संबंधों पर किसी प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं था और न ही छुआछूत थी। न तो किसी वर्ण को छोटा माना जाता था और न ही अपवित्र। ऋग्वेद में एक स्थान पर एक व्यक्ति कहता है कि ''मैं मंत्र का निर्माता हूँ, मेरे पिता वैद्य है और मेरी माता पत्थर की चक्की से अन्न पीसने वाली महिला है''। इससे स्पष्ट है कि वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था जन्म प्रधान न होकर कर्म प्रधान थी।

गतिविधि

चर्चा करें–

1. संयुक्त परिवार प्रथा की क्या विशेषताएँ थी?
2. वैदिक काल में शिक्षा का माध्यम क्या था?
3. वैदिक काल की प्रमुख विदुषी स्त्रियों के नाम बताइए ।
4. वैदिक काल में व्यक्ति के लिए कितने संस्कारों का विधान था?

वैदिककालीन राजनीतिक जीवन

आर्यों के राजनीतिक जीवन का मूल आधार कुटुम्ब था। कई कुटुम्बों को मिलाकर एक ग्राम बनता था । ग्राम के अधिकारी को 'ग्रामणी' कहते थे। कई ग्रामों के समूह को मिलाने पर 'विश' नामक इकाई बनती थी, जिसका अधिकारी 'विशपति' कहलाता था। कई विशों के समूह से 'जन' नामक इकाई बनती थी, जिसके अधिकारी को 'शासक' अथवा 'राजन्' कहा जाता था। जनों का राजनीतिक संगठन प्रायः एक जैसा था।

राजन् और उसके कार्य– राजन् राज्य का सर्वोच्च अधिकारी था। सामान्यतः राजा की मृत्यु बाद उसका पुत्र शासक बनता था अर्थात् उसका पद पैतृक था, परन्तु कभी–कभी जनता नए राजा का निर्वाचन भी करती थी। राज्य की समस्त शक्तियाँ उसके हाथों में केन्द्रित थी। वह राज्य के कर्मचारियों तथा

अधिकारियों को नियुक्त करता था तथा उन्हें पदोन्नत एवं पदच्युत भी कर सकता था। उसका निर्णय अंतिम समझा जाता था। किन्तु वह मनमानी नहीं कर सकता था। अपने मंत्रिपरिषद् से विचार – विमर्श करने के बाद वह अपनी नीति – निर्धारण कर सकता था। उसको परामर्श देने के लिये सभा तथा समिति नामक दो संस्थाएँ थीं। समिति जनता के सदस्यों का संगठन था जबकि सभा केवल मुख्य पदाधिकारियों एवं विद्वानों की बैठक थी। सभा तथा समिति को काफी प्रशासनिक अधिकार प्राप्त थे। वे राजा को पदच्युत एवं निर्वाचित कर सकती थी। वे राजा को शासन–कार्य चलाने में सहायता देती थी और उसकी शक्तियों पर अंकुश रखती थी। शक्तिशाली राजा भी इन संस्थाओं के निर्णयों की अवहेलना करने का साहस नहीं कर सकता था।

गतिविधि

हमारे देश में कानून बनाने वाली सर्वोच्च संस्थाएँ कौन–कौन सी है ? सूची बनाएँ।

वेद कालीन आर्थिक जीवन

आर्यों का आर्थिक जीवन काफी उन्नत था। उस समय लोगों की आजीविका के मुख्य साधन कृषि, पशुपालन एवं व्यापार आदि थे।

कृषि

आर्यों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। वे जौ, गेहूँ, चावल आदि फसलें पैदा करते थे। इस काल में कृषि वर्षा पर निर्भर थी। वर्षा के अभाव में कुए तथा नहरें भी जल सिंचाई के साधन थे। खेती का काम हल व बैल से किया जाता था। अच्छी फसल के लिए खाद का प्रयोग भी किया जाता था। प्रत्येक गाँव में दो प्रकार की भूमि होती थी, प्रथम – उर्वरा एवं द्वितीय – खिल्य। उर्वरा भूमि पर फसल पैदा हो सकती थी। ऐसी भूमि पर किसी न किसी व्यक्ति का अधिकार होता था। खिल्य भूमि उसे कहते थे जो बंजर होती थी। ऐसी भूमि पर समस्त गाँव का अधिकार होता था, वहाँ पर ग्रामीण अपने पशु चराते थे।

पशुपालन

आर्यों का दूसरा मुख्य व्यवसाय पशुपालन था। उस समय आर्य लोग गाय, भैंस, भेड़, बकरी एवं घोड़ा आदि पशुओं का पालन करते थे। गाय का उनके जीवन में विशेष महत्त्व था।

शिल्प

आर्यों ने शिल्पकला में भी बहुत उन्नति की थी। वे कपड़ा अच्छा बुनते थे तथा चमड़ा रंगने एवं आभूषण बनाने की कला में भी दक्ष थे। बढ़ई लोग हल, बैलगाड़ियाँ, तख्त, चारपाई, नौकाएँ आदि बनाने में काफी निपुण थे। कुछ लोग लोहार, सुनार, कुम्हार का कार्य भी करते थे । इस समय वैद्य भी थे जो कि चिकित्सा का कार्य करते थे। इन लोगों के धन्धे के सम्बन्ध में विशेष बात यह थी कि किसी भी शिल्प को हीन नहीं समझा जाता था। शिल्पकार समाज में आदरणीय थे।

व्यापार

आर्य लोग व्यापार भी करते थे। व्यापारी वर्ग को पणि कहा जाता था। विदेशी व्यापार, जल और स्थल दोनों मार्गों से होता था। व्यापार के लिए वस्तु–विनिमय का प्रयोग होता था। ऋग्वेद के अध्ययन से

पता चलता है कि उन दिनों 'निष्क' नामक सिक्का भी प्रचलित था। स्वर्ण निर्मित इस सिक्के का प्रयोग मुद्रा के रूप में किया जाता था। उस समय वस्तुएँ ऊँटों, छकड़ों एवं घोड़ों के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जाती थी।

यह भी जानें

ऋग्वेदकालीन नदियाँ

प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
कुभा	काबुल
कुर्मुदा	कुर्रुम
गोमती	गोमल
सुवस्तु	स्वात
सिन्धु	सिन्ध
वितस्ता	झेलम
अश्किनि	चिनाब
परुष्णी	रावी
विपाशा	व्यास
षतुद्री	सतलज
द्वषद्वती	सरस्वती

शब्दावली

वैदिकसाहित्य – वैदिक काल में लिखा गया साहित्य
उपदेशक – उपदेश देने वाला
कुटुम्ब – परिवार

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखिए –

1. वेदों की संख्या हैं–

(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) पाँच ( )

2. सरस्वती नदी का प्राचीन नाम है–

(अ) विपाषा (ब) सिंधु

(स) गोमती (द) द्वषद्वती ( )

3. वेद कालीन दो राजनीतिक संस्थाओं के नाम बताइए।

4. वैदिक काल में परिवार प्रथा कैसी थी?

5. 'पणि' एवं 'निष्क' का क्या अर्थ है ?

6. वेदों के नाम बताइए इनमें सबसे प्राचीन वेद कौनसा है?

7. वेदकालीन शिल्पकला पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

8. वैदिक संस्कृति की विशेषताएँ लिखिए।

9. वैदिक काल की शिक्षा का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

10. वेदकालीन आश्रम व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

11. वेदकालीन व्यापार पर टिप्पणी लिखिए।

12 वेद के भाग कौन–कोन से हैं ?

गतिविधि

1. वैदिक सभ्यता और संस्कृति के कौन–कौन से रीति–रिवाज, प्रथाएँ व संस्कार आज भी प्रचलन में है। इनकी सूची बनाइए?
2. वैदिक साहित्य की चयनित कहानियों का बालसभा में मंचन करें ।